क्षितिज

वैल्हम गर्ल्स स्कूल, देहरादून

अंक २ - अक्टूबर, 2025

"नेति–नेति का है यह मंत्र,
सभी आवरण हटाकर देखो।
जो शेष बचे वह सत्य है,
स्वयं का स्वयं से साक्षात्कार करके देखो।"

स्कैन कीजिए और क्षितिज पढ़ने का आनंद अपने फोन पर ही लीजिए।

सौजन्य से - टिया कपूर

सम्पादिका की कलम से

प्रत्येक वर्ष के समान इस वर्ष भी संस्थापना दिवस के वार्षिकोत्सव की तैयारियाँ बहुत जोर-शोर से आरंभ हो चुकी हैं। कहीं पर मार्चपास्ट हो रहा है तो कहीं संगीत और नृत्य की तैयारियाँ और कहीं पर प्रदर्शनी में क्या नया किया जाए, इस पर विचार किया जा रहा है। हम कभी-कभी अपने दैनिक जीवन के कार्यों में इतना निमग्न हो जाते हैं कि आत्ममंथन करने का अवसर ही नहीं प्राप्त होता तो फिर यह तो हमारे विद्यालय का संस्थापना दिवस है जिसमें हम सब कुछ भूलकर अविरत शक्ति से कार्य करते हैं।

इस वर्ष संस्थापना दिवस के लिए चुने गए विषय "नेति नेति" ने मुझे भी आत्ममंथन करने की वैचारिक शक्ति प्रदान की। बृहदारण्यक उपनिषद के इस उद्घोष "नेति नेति" का अर्थ है, न तो यह और न ही वह। यह मात्र एक दार्शनिक वाक्य नहीं, अपितु आत्मा की खोज की वह यात्रा है जहाँ हम धीरे-धीरे यह समझते हैं कि हम वे नहीं हैं जो केवल दिखते हैं। हमारा अस्तित्व मात्र हमारे कार्यों में नहीं है और न ही हमारी पहचान हमारे नाम या उपलब्धियों में है। यह तो वह सत्य है जो न तो बदलता है और न ही मिटता है और वह है हमारा 'स्वत्व'।

यही विचार इस वर्ष की क्षितिज के पन्नों में भी प्रतिध्वनित होता है। क्षितिज, अर्थात वह रेखा जो दिखती तो है पर वास्तव में उसका अस्तित्व नहीं है। ठीक उसी प्रकार,"नेति-नेति" का आदर्श वाक्य हमें यह सिखाता है कि जीवन का हर अनुभव, हर खोज, हर उपलब्धि उस अनंत सत्य की ओर ले जाने का एक चरण मात्र है।

तो आइए, इस "नेति-नेति" की यात्रा पर साथ चलें, जहाँ हम बाहरी दुनिया की भागदौड़ के परे जाकर स्वयं को, अपनी सीमाओं को, और अपने भीतर छिपे अनंत को जानने करने का प्रयत्न कर सकें क्योंकि अंततः, यही खोज जीवन का सबसे सुंदर सत्य है। यह दर्शन हमें विनम्र बनाता है, क्योंकि यह अहंकार से नहीं अपितु जिज्ञासा से आरंभ होता है। यह खोज केवल भगवान या आत्मा की नहीं, अपने सच्चे अस्तित्व की भी है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है कि इस वर्ष हम इस नए विचार से एक अनूठी शिक्षा ग्रहण कर अपने जीवन में आत्मसात कर सकेंगे और अपने जीवन को सहज और सकारात्मक रूप से समझने का प्रयास कर सकेंगे।

आशा करती हूँ कि हर वर्ष के समान इस वर्ष भी क्षितिज का यह अंक आप सभी को रुचिकर लगेगा।

मुख्य सम्पादिका
आशिया महाजन

इस अंक में आगे

- जरा मुस्कुराइए, अच्छा लगता है...
- आनन्दम्
- छोटे कदम, बड़े परिणाम
- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते ....
- हौसलों की उड़ान: एवरेस्ट बेस कैंप में वैल्हमाइट्स का कमाल
- वर्तमान समय में "वसुधैव कुटुम्बकम् "की प्रासंगिकता
- डार्विन का विकासवाद और विष्णु के दस अवतार
- परदे के और भी पीछे !
- क्या अंतरिक्ष को खोजना ज़रूरी है?
- हाउस का राशिफन
- दीपावली! परंपरा नहीं, कर्म की प्रेरणा का अवसर है
- कृतज्ञता
- गौरव के क्षण
- एक मुलाकात : वैल्हम के रोल नंबर एक के साथ
- छोटा बटुआ, बड़े सपने
- मौन मध्यस्थ, मुखर स्वार्थ
- बदलते सपने
- शब्दहार: मेघ से मेघमाला तक
- परदे के पीछे

सकारात्मकता

जरा मुस्कुराइए, अच्छा लगता है...

मुस्कुराना एक सकारात्मक प्रभाव है। हम मुस्कुराना हैं इसका अर्थ है कि हम अपने जीवन में सुखी, संतुष्ट और स्वस्थ हैं क्योंकि स्वास्थ्य पर भी मुस्कुराना का प्रभाव पड़ता है। मुस्कान मानव जीवन की सबसे सरल किंतु सबसे प्रभावशाली शक्ति है। यह मात्र चेहरे की सजावट नहीं, अपितु अंतर्मन से उपजी एक सकारात्मक ऊर्जा है। जब कोई व्यक्ति मुस्कुराता है, तो वह केवल अपनी ही नहीं, बल्कि आसपास के वातावरण की उदासी भी दूर कर देता है। आज की व्यस्त और तनावपूर्ण दुनिया में मुस्कुराना अक्सर कठिन हो जाता है। हम चिंता, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष में इतने उलझ जाते हैं कि हमारी मुस्कान जैसे कहीं खो सी जाती है किंतु सच यह है कि मुस्कान ही जीवन की जटिलताओं को सरल बना सकती है। यह थके हुए मन को विश्राम देती है और कठिन परिस्थितियों में आशा की किरण बनकर उभरती है। मुस्कान का सबसे बड़ा गुण यह है कि यह निःस्वार्थ होती है। इसे बाँटने पर कोई कमी नहीं आती अपितु यह और अधिक गहरी हो जाती है। मुस्कुराने से न केवल मानसिक तनाव कम होता है, बल्कि शरीर में सकारात्मक हार्मोन भी सक्रिय होते हैं। यही कारण है कि एक सच्ची मुस्कान औषधि से भी अधिक प्रभावशाली सिद्ध हो सकती है अतः जीवन कितना भी कठिन क्यों न लगे, अपने चेहरे पर मुस्कान बनाए रखना न भूलें। यह न केवल आपके भीतर का साहस बढ़ाएगी, बल्कि दूसरों को भी उम्मीद और हौसला देगी। मुस्कान पर एक सुंदर कविता का अनायास ही स्मरण हो आता है-

मानव मुस्कान भरो मन में, जीवन नीरस न बनने दो, किसलय कुसुम सा खिलने दो।
प्रातः काल मतवाली हो या, अस्तकाल की लाली हो। अरुण ऊर्मि भर लो तन में, मानव मुस्कान भरो मन में...

आनन्दम्

चलो थोड़ा मुस्कुराते हैं।
इस दवा को आज़माते हैं।
कठिनाई में खिलखिलाते हैं,
मुसीबत में भी मुस्कुराते हैं।

मुस्कुराना ही औषधि है बेहतरीन,
चलो इस दवा को भी आज़माते हैं।

बेहतरी के नाम पर मुस्कुराते हैं,
सुनहरे कल के लिए मुस्कुराते हैं।

छोटे कदम, बड़े परिणाम

एक वृद्ध व्यक्ति समुद्र तट के किनारे घूम रहा था। उसने देखा कि सैकड़ों बड़ी मछलियाँ लहरों के साथ रेत पर आ गई थीं और तड़प रही थीं तभी उसने एक छोटा बच्चा देखा, जो एक-एक करके उन मछलियों को उठाकर वापस समुद्र में फेंक रहा था। यह देखकर बूढ़े आदमी ने बच्चे से पूछा,"बेटा, तुम यह क्यों कर रहे हो? देखो, यहाँ सैकड़ों मछलियाँ मरी पड़ी हैं। तुम्हारी कुछ मछलियों को वापस पानी में फेंकने से क्या अंतर होगा?" बच्चे ने एक और मछली उठाकर पानी में फेंकते हुए जवाब दिया, "इस एक मछली की तो जान बच जाएगी।"

इस छोटी सी कहानी से पता चलता है कि छोटे-छोटे प्रयास भी एक बड़े बदलाव का आरंभ हो सकते हैं साथ ही प्रत्येक छोटा प्रयास भी महत्त्वपूर्ण है। यह विचार सिर्फ व्यक्तिगत जीवन पर ही नहीं, बल्कि समाज के लिए भी लागू होता है। छोटे प्रयासों से भी समाज में जागरूकता लाई जा सकती है क्योंकि हर बड़ा लक्ष्य छोटे-छोटे कदमों से ही पूरा होता है।

बूँद-बूँद से सागर भरता,
दीपक से अँधियारा डरता।
रेत के कण मिल पत्थर बनते,
हौंसलों से ही सपने सजते।

छोटे-छोटे कदम जो बढ़ते,
जीवन के हर पथ को गढ़ते।
थोड़ा-थोड़ा श्रम जो करते,
भविष्य के द्वार स्वयं ही खुलते।

नविका जिंदल
कक्षा - ग्यारह

क्षितिज परिवार संस्थापना दिवस के वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथिगण का हार्दिक स्वागत करता है !

सुश्री गायत्री इस्सर कुमार

सुश्री गायत्री इस्सर कुमार एक सेवानिवृत्त भारतीय विदेश सेवा अधिकारी हैं जिन्होंने यूनाइटेड किंगडम में भारत की उच्चायुक्त के रूप में काम किया है। उन्होंने पहले बेल्जियम, यूरोपीय संघ और लक्समबर्ग में राजदूत के रूप में भी कार्य किया है।

सुश्री सोन्या फिलिप

सुश्री सोन्या फिलिप लर्निंग मैटर्स, इंडिया की संस्थापिका एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं साथ ही वे एक समर्पित शिक्षिका हैं। उनका उद्देश्य खेल की शक्ति के माध्यम से एक ऐसी दुनिया का निर्माण करना है जो पूर्णतः विद्यार्थियों के हित और विकास पर केंद्रित हो।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते ...

वैदिक युग से ही भारतीय संस्कृति में यह मान्यता रही है कि महिलाओं का सम्मान करना सर्वोच्च मानवीय मूल्य है। वैदिक युग में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी विदुषियों ने न केवल वेदों पर चर्चा की बल्कि दार्शनिक चिंतन में पुरुषों को भी चुनौती दी। दुर्भाग्य से समय के साथ यह स्थिति बदलती गई। आधुनिक समाज में महिलाएँ आज भी शिक्षा और अवसर तो प्राप्त करती हैं, लेकिन उनके योगदान को कितना सराहा जाता है, यह प्रश्न आज भी गहरा है। इस सामाजिक असमानता का लाभ कई पुरुषों ने काफी समझदारी से उठाया है। सुनने में यह अनुचित बात है किन्तु यह अन्याय सदियों से होता रहा है। आइंस्टाइन की पहली पत्नी मिलेवा मैरिक ने अनेक गणितीय तर्कों और विचारों की खोजों की नींव रखी किन्तु उनका नाम इतिहास में कहीं खो गया। क्वांटम भौतिकी में पॉल डिरैक के प्रयोगों में उनकी पत्नी और महिला सहयोगियों का भी योगदान था। इतिहास में पूरा श्रेय केवल डिरैक को ही मिला। इसके अतिरिक्त कई शुरुआती कंप्यूटर प्रोग्राम और एल्गोरिदम विकसित करने में महिलाएँ शामिल थीं। उदाहरण के लिए, लिज़ा माइटन ने कोडिंग और परीक्षण में महत्तवपूर्ण योगदान दिया लेकिन उनके विषय में भी आज कोई नहीं जानता। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि महिलाएँ प्रतिभावान नहीं रहीं। समस्या यह है कि समाज और व्यवस्था ने उनके योगदान को स्वीकारने में कोई रुचि नहीं रखी।

मैरी क्यूरी का नाम सुनते ही विज्ञान की दुनिया में रेडियम और पोलोनियम की खोज याद आती है। उन्होंने रेडियोधर्मिता (Radioactivity) के क्षेत्र में असाधारण योगदान दिया। लेकिन जब उन्हें भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला, तब कई लोगों के मन में आक्रोश का भाव उत्पन्न हो गया। वैज्ञानिक और पत्रकार उनके पुरस्कार पर आलोचना करने लगे, यह कहते हुए कि उनकी सफलता केवल पति की मदद से ही संभव हो सकी।

वैदिक युग से लेकर आज तक महिलाएँ सदैव प्रतिभा और बुद्धिमत्ता में आगे रही हैं। अंतर केवल इतना है कि अब समाज धीरे-धीरे उनके योगदान को पहचानने और सम्मान देने लगा है। जब तक महिलाएँ सम्मान और श्रेय से वंचित रहेंगी, तब तक समाज की प्रगति अधूरी रहेगी। वर्तमान में महिलाओं का सम्मान और उनका योगदान पहचानना, समाज की प्रगति का सबसे बड़ा संकेत है।

अदिति रंजन
कक्षा - आठ

हौसलों की उड़ान: एवरेस्ट बेस कैंप में वैल्हमाइट्स का कमाल!

"शिखर ऊँचे हों या जीवन की चुनौतियाँ,
जीत हमेशा उन्हीं की होती है जिनके हौसले बुलंद हों!"

"वसुधैव कुटुम्बकम् "की प्रासंगिकता

न कोई अजनबी, न कोई पराया,यह छोटी सोच है, मन का साया।
यह पूरा जग ही है एक परिवार, सबको अपना माना, यही है सार ।

हम भारतीय सदियों से गर्व से कहते आए हैं "वसुधैव कुटुम्बकम्", अर्थात पूरी धरती हमारा परिवार है साथ ही हमारी संस्कृति भी कहती है, "यत्र विश्वं भवत्येकनीड़म्"। वास्तविकता तो तब ज्ञात होती है जब हम इस आदर्श वाक्य को "परिवार" की दृष्टि से देखते हैं। हम परिवार में एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं, लेकिन अंतरराष्ट्रीय परिवार में अमीर देश ग़रीब देशों को केवल कर्ज़ का ब्याज देने की याद दिलाते हैं। परिवार में भाई-बहन लड़कर भी सुलह कर लेते हैं, पर देशों के बीच छोटी-सी ज़मीन के लिए पीढ़ियों तक युद्ध चलता रहता है। आजकल "वसुधैव कुटुम्बकम्" एक कथन मात्र रह गया है।

वास्तविकता में यदि पूरी धरती एक परिवार होती, तो वस्तुत: अस्त्रों पर खर्च होने वाला अरबों रुपया शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण पर लगाया जाता और सम्पूर्ण पृथ्वी कुटुंब के समान ही प्रतीत होती। वास्तव में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना तब ही शोभित होगी जब यह पुस्तकों से निकलकर व्यवहार में भी दिखे।

वेदांशी डबराल एवं अमरीन
कक्षा - ग्यारह

अनूठा फैशन शो

जब रचनात्मकता और पर्यावरण जागरूकता एक साथ हाथ मिलाएँ, तो साधारण वस्तुएँ भी असाधारण बन जाती हैं। ऐसा ही कुछ असाधारण देखने के लिए मिला, हमारे विद्यालय में। जहाँ आयोजित "फैशन शो" इसका शानदार उदाहरण था। इस शो का उद्देश्य यह बताना था कि फैशन केवल ब्रांडेड कपड़ों और महंगे डिज़ाइनों का नहीं, बल्कि सोच और सृजनशीलता का नाम है।

इस शो में सभी ने अपनी कल्पना का प्रयोग करते हुए पुराने वस्त्रों से नई सोच को जन्म दिया था। किसी ने पुरानी सीडी और बोतलों से चमकदार कपड़े बनाए तो किसी ने अख़बारों और प्लास्टिक के थैलों से सुंदर स्कर्ट तैयार की और तो और किसी ने कैंडी रैपर्स और पुराने परदों से भी बनाई चमचमाती जैकेट्स। मंच पर जब "अनुपयोगी वस्तुओं और वस्त्रों" से बने कपड़ो में वैल्हमाइट्स आत्मविश्वास से चले, तो यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जो चीज़ें हम फेंक देते हैं, वही थोड़ी-सी कल्पना से कला का रूप ले सकती हैं। इस शो से सभी को यह सोचना पड़ा कि-

"फ़ैशन वही नहीं जो नया हो, फ़ैशन वह है जो धरती को बचाए और हमें सोचने पर मजबूर करे!"

वैदिक प्रज्ञा

डार्विन का विकासवाद और विष्णु के दस अवतार

कुछ वर्ष पूर्व मैंने डार्विन के विकासवाद का सिद्धांत पढ़ा था जिसमें यह बताया गया था कि पृथ्वी पर जीवन करोड़ों वर्षों में साधारण जीवों से जटिल प्राणियों तक विकसित हुआ है। यह विचार उस समय अत्यधिक क्रांतिकारी माना गया। जब-जब मैं डार्विन के विकासवाद का सिद्धांत पढ़ती हूँ, मेरे मन में एक यही यह प्रश्न उठता है कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में वर्णित विष्णु के दस अवतार (दशावतार) और इस सिद्धांत में क्या समानता है? जब मैंने दशावतार और विकासवाद की तुलना की तो कुछ तथ्य मुझे समान प्रतीत हुए, जैसे –विष्णु के प्रथम अवतार,"मत्स्य अवतार" से जलीय जीवन की शुरुआत हुई और विकासवाद के अनुसार भी जीवन की शुरुआत समुद्र से हुई। सर्वप्रथम जीव जलीय प्राणी थे। विष्णु का पहला अवतार मत्स्य (मछली) इसी अवस्था को दर्शाता है।

विष्णु का दूसरा "कूर्म अवतार" जल-थल जीव को प्रदर्शित करता है। कछुआ पानी और जमीन दोनों पर रहता है। यह उस अवस्था का प्रतीक है जब जीव पानी से निकलकर भूमि पर विचरण करने लगे। वराह अवतार स्थलीय पशु का है जो पूर्णतया भूमि पर रहने वाला प्राणी है। यह स्थलीय जीव-जगत के विकास को दिखाता है।"नरसिंह अवतार" स्तनधारी और प्रारंभिक मानव है । यह अवतार आधा पशु और आधा मनुष्य है। यह पशु से मानव की ओर बढ़ने का प्रतीक है।

वहीं "वामन अवतार" प्रारंभिक मानव का विकास है। वामन अर्थात बौना मनुष्य। यह उस अवस्था का प्रतीक है जब मनुष्य छोटा, कमजोर और विकास की आरंभिक अवस्था में था। इसी के साथ "परशुराम अवतार" शिकारी मानव का प्रतीक है क्योंकि परशुराम को परशु योद्धा माना जाता है। यह उस अवस्था का प्रतीक है जब मनुष्य ने शिकार और हथियारों का प्रयोग शुरू किया। इसके पश्चात "राम अवतार" सभ्य समाज का अवतार है। राम आदर्श राजा और मर्यादा पुरुषोत्तम माने जाते हैं। यह मानव सभ्यता, सामाजिक व्यवस्था और नैतिकता की स्थापना को दर्शाता है। "कृष्ण अवतार" रणनीतिक बुद्धिमत्ता को प्रदर्शित करते हैं। कृष्ण केवल योद्धा ही नहीं, बल्कि रणनीतिकार और दार्शनिक भी थे। उनका अवतार मानव बुद्धि, राजनीति और दर्शन की पराकाष्ठा को दर्शाता है।

"बुद्ध अवतार" आत्म-जागरूकता और करुणा का अवतार है जो कि मनुष्य के आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन को प्रदर्शित करता है। यह वह अवस्था है जब मानव केवल भौतिक जगत नहीं, अपितु आत्मा और चेतना को भी समझने लगा। अंत में "कल्कि अवतार" अज्ञात विकास का प्रतीक है क्योंकि कल्कि अभी प्रकट नहीं हुए हैं। इसे मानवता के अगले चरण या संभवतः किसी नए रूप के विकास के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है।

जब मैंने दशावतार और विकासवाद के सिद्धांत की तुलना की, तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची कि संभवत: मछली से लेकर आधुनिक मानव तक, विष्णु के अवतार लगभग उसी क्रम का अनुसरण करते हैं, जिसे विज्ञान ने विकासवाद बताया। इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है। संभव है कि यह केवल एक सांस्कृतिक संयोग हो लेकिन यह विचारणीय है कि प्राचीन ऋषियों और मनीषियों ने जीवन के विकास और उसके क्रम को अद्भुत रूप से समझा था।

विज्ञान ने जहाँ शारीरिक विकास की बात की, वहीं दशावतार यह भी दिखाते हैं कि इंसान का असली विकास उसकी सोच, नैतिकता और आत्मिक चेतना में है। धर्म और विज्ञान को अक्सर विरोधी माना जाता है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है यहाँ दोनों एक दूसरे के पूरक है क्योंकि एक बताता है कैसे जीवन बढ़ा? दूसरा बताता है कि क्यों जीवन को बेहतर बनाना ज़रूरी है। दशावतार और विकासवाद दोनों यह संदेश देते हैं कि जीवन एक निरंतर चलने वाली यात्रा है जिसमें मछली से शुरू होकर इंसान चेतना और करुणा तक पहुँचता है, और यही हमें न केवल अतीत को समझने, बल्कि भविष्य को सँवारने की प्रेरणा देता है।

दिव्यांशी नायक
कक्षा - ग्यारह

परदे के पीछे भी परदे!

क्या अंतरिक्ष को खोजना ज़रूरी है?

जब मै छोटी थी तब रात का आकाश जब तारों से जगमगाता है तो मन स्वयं से ही पूछ बैठता था,क्या इन तारों के पार भी कोई जीवन होगा? क्या मनुष्य कभी उन तक पहुँच पाएगा? इन प्रश्नों से मन अनायास ही अंतरिक्ष की ओर आकृष्ट हो जाता था। मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत है- उसकी जिज्ञासा और उसके मन की उत्सुकता। मनुष्य सदैव ही अज्ञात को जानना चाहता है। चाँद पर पहला कदम हो, मंगल ग्रह पर रोवर भेजना हो या दूर की आकाशगंगाओं की तस्वीर लेना हो, प्रत्येक उपलब्धि हमें यह सिखाती है कि कोई भी स्वप्न पूरा करना असंभव नहीं है।धरती के संसाधन असीमित नहीं हैं। जनसंख्या बढ़ रही है, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन हमारे सामने चुनौती बनकर खड़े हैं। वैज्ञानिक मानते हैं कि भविष्य में मानव जाति को धरती से बाहर भी नया घर तलाशना पड़ सकता है। इस दृष्टि से अंतरिक्ष अनुसंधान सिर्फ रोमांच नहीं, अपितु मानव जीवन के अस्तित्व की सुरक्षा भी है। आज की आधुनिक सुविधाएँ जिनमें मोबाइल का जीपीएस, मौसम की भविष्यवाणी, इंटरनेट, सैटेलाइट टीवी का निरंतर हम उपयोग कर रहे हैं, वे सब अंतरिक्ष अनुसंधान की ही देन हैं। सोचिए, अगर उपग्रह न होते तो हम प्राकृतिक आपदाओं जैसे चक्रवात या भूकंप की सही जानकारी समय पर कैसे पाते? अर्थात अंतरिक्ष की खोज ने हमारी ज़िंदगी को आसान और सुरक्षित बनाया है। कई लोग कहते हैं कि जब धरती पर ही गरीबी, भूख और बीमारियाँ हैं तो अरबों रुपए अंतरिक्ष पर क्यों खर्च किए जाएँ? यह तर्क सही लगता है, लेकिन यह भी समझना चाहिए कि अंतरिक्ष में लगाया गया हर पैसा नवीन तकनीक, नई नौकरियों और धरती की समस्याओं के समाधान में सहायता करता है।

अंतरिक्ष की खोज केवल वैज्ञानिक महत्त्वाकांक्षा नहीं है। यह मानव सभ्यता का सपना है, प्रेरणा है और उज्ज्वल भविष्य की कुंजी है। अंतरिक्ष की खोज सिर्फ विज्ञान की नहीं, बल्कि मानवता की यात्रा है। यह हमें सिखाती है कि "आसमान सीमा नहीं है, बल्कि उसके पार भी एक नया संसार हमारा इंतज़ार कर रहा है।" इसलिए भी अंतरिक्ष को खोजना आवश्यक है, क्योंकि यह हमारे सपनों, सुरक्षा और सभ्यता तीनों के लिए मार्ग प्रशस्त करती है।

पावनि महेंद्र
कक्षा - दस

हाउस का राशि “फन” ....

<u>बुलबुल</u> के लिए अक्टूबर का माह बहुत सुखद रहेगा इस माह आपका हाउस ऊर्जा से परिपूर्ण रहेगा। खेल के मैदान में आप हीरे की तरह चमकेंगे, खेल प्रतियोगिताओं में आपकी एनर्जी पूरे मैदान को झुलसा सकती है। बस ध्यान रहे, “उत्साह” और “उत्पात” में अंतर है।
शुभ रंग: लाल
शुभ वाक्य: “पहले सोचो, फिर दौड़ो!”

<u>फ़्लाईकैचर</u> हाउस के बिना स्कूल का कोई भी कार्यक्रम अधूरा है। यदि आप ऐसा सोच रहें हैं तो ऐसा बिल्कुल भी नहीं होगा। दूसरे सदन आपसे प्रेरणा ले कर आगे बढ़ने वाले हैं इसलिए सावधान रहें। आपकी रचनात्मकता से सब प्रभावित होंगे फिर पोस्टर बनाना हो या बहाना!
शुभ रंग: नीला
शुभ वाक्य: “जहाँ रोशनी है, वहीं नीला है!”

<u>हुपूस</u> इस माह पूरे ‘सनशाइन मोड’ में रहेंगे! आपकी मुस्कान सबका मन प्रसन्न कर देगी। आपकी रचनात्मक सोच सर्वत्र चमकेगी। आपकी बुद्धिमत्ता आपको आगे ले जाएगी, बशर्ते आप कहीं भी किसी भी समय बीच में झपकी न लें।
शुभरंग: नारंगी
शुभ वाक्य: “हम अलग हैं, और हमें इस पर गर्व है।”

<u>ऑरियल</u> इस माह सोचते-सोचते इतना सोचेंगे कि काम शुरू ही नहीं करेंगे। आपको सलाह दी जाती है कि सावधान रहें, कहीं सोचते-सोचते डेडलाइन न निकल जाए! नहीं तो बेड मार्क्स की वर्षा होने की सम्भावना है।
शुभ रंग: पीला
शुभ वाक्य- “हमारी मुस्कान, स्कूल की पहचान!”

<u>वुड्पेकर</u> हाउस ठंडे दिमाग और गहरी समझ के लिए जाना जाता है। इस सप्ताह आपके हाउस का कोई नया विचार पूरे विद्यालय को आश्चर्यचकित कर देगा। लेकिन सावधान! आपकी “ज़्यादा सोचने” की आदत आपके ही रास्ते में रुकावट बन सकती है।
शुभ रंग: हरा
शुभ वाक्य -“हम से है जहाँ और किसी में दम कहाँ।”

थोड़ा-थोड़ा जागा जागा सा..

थोड़ा-थोड़ा सोया सोया सा...

दीपावली परंपरा नहीं, कर्म की प्रेरणा का अवसर है!

दीपावली का पर्व समीप ही है। विजयादशमी के पश्चात दीपावली आती है। विजयादशमी अर्थात बुराई के प्रतीक अमर्यादित रावण, जो राक्षसी संस्कृति का प्रतिनिधि माना जाता है, पर मर्यादा के प्रतीक राम की विजय का दिन। विजयादशमी संघर्ष के परिणाम का दिवस है तो दीपावली एक नए उत्तरदायित्व को ग्रहण करने का पर्व है। मान्यता के अनुसार दीपावली के बाद मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने अयोध्या के राजसिंहासन पर बैठकर एक राजा के कर्तव्यों को स्वीकार किया था। एक राजा के रूप में उन्हें क्या करना है? देश के प्रति उनके क्या कर्त्तव्य है? प्रजा में संस्कारों, आदर्शो व चरित्र के उच्च मानदण्डों के लिए उन्होंने अपने पारिवारिक जीवन को भी दाँव पर लगा दिया। व्यक्तिगत व पारिवारिक हितों से भी अधिक सामाजिक हितों को सर्वप्रथम रखने का जीवंत उदाहरण श्री राम का जीवन है। राम के समान प्रजापालक राजा इतिहास में खोजने से भी शायद दूसरा न मिले। शासन व प्रशासन में बैठे व्यक्तियों के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम से अधिक प्रेरक व्यक्तित्व और कोई दूसरा नहीं हो सकता। राम का चरित्र पूजा करने के लिए नहीं, अनुकरण करने के लिए है।

वर्तमान में हमारा दुर्भाग्य है कि हम कर्तव्य की अपेक्षा अधिकार को, विकास की अपेक्षा परंपरा को, व्यवहार की अपेक्षा सिद्धांत को और कर्म की अपेक्षा परिणाम को अधिक प्राथमिकता देते हैं। यह विडम्बना है कि हम विजयादशमी पर रावण का पुतला जलाते हैं और अपने आचरण में रावण के ही स्वार्थवादी चरित्र को भी पूजते हैं।

मर्यादा व आदर्शो को जीवन में अपनाने के लिए विजयादशमी और दीपावली सुअवसर हैं। विजयादशमी और दीपावली दोनों पर ही इन पर्वो के मूल भाव को समझते हुए अपने-अपने अन्दर पनपती राक्षसी प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करने की आवश्यकता पर विचार करना चाहिए। मानव, मानवता और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए श्री राम द्वारा किए गए कर्म से प्रेरणा ग्रहण कर स्वयं को कर्मपथ पर अग्रसर करना चाहिए। हमें राम के कर्मों को अपने आचरण में उतारकर उनके कर्म पथ पर चलकर स्वयं को उनका सच्चा अनुयायी सिद्ध करना चाहिए। हम रावण का पुतला न जलाएँ अपितु राक्षसी प्रवृत्तियों को जलाएँ। अपने अन्तर्मन को स्वच्छ करें और वहाँ ज्ञान का दीपक प्रज्ज्वलित करें।

आर्या शर्मा
कक्षा - दस

कृतज्ञता

चार दीपक आपस में बात कर रहे थे।पहला दीपक बोला, "मैं हमेशा बड़ा, सुंदर और आकर्षक घड़ा बनना चाहता था। अब एक छोटा सा दीपक बन गया?" दूसरा दीपक बोला "मैं भी एक भव्य मूर्ति बनकर किसी अमीर व्यक्ति के घर की शोभा बढ़ाना चाहता था।" किन्तु कुम्हार ने मुझे भी एक छोटा सा दीपक बना दिया। तीसरा दीपक बोला, "मुझे धन से बहुत प्रेम है, काश! मैं गुल्लक बनता तो सदैव ही पैसों से भरा रहता किन्तु मेरे भाग्य ने भी मेरा साथ नहीं दिया।" चौथा दीपक शान्त रहकर उनकी बातें सुन रहा था। चौथे दीपक ने कहा, "भाइयों! कुम्हार जब मुझे बना रहा था तो मैं बहुत खुश हो रहा था क्योंकि वह मुझे बनाते समय अति प्रसन्न था। उसने जब मुझे बनाया तो मैं अपने जीवन के प्रति कृतज्ञ हो गया क्योंकि मैं एक बिखरी हुई मिट्टी से एक सुंदर दीपक बना गया जो अंधेरे को दूर करने का साहस रखता है। मैं वह साहसी दीपक हूँ जिसके जलते ही अँधेरा दूर हो जाता है। मैं आभारी हूँ उस कुम्हार का जिसने मुझे ऐसा रूप दिया। मेरा प्रकाश केवल अँधेरे को ही दूर नहीं करता अपितु एक नवीन उम्मीद और ऊर्जा का संचार करता है।" चौथे दीपक की बातें सुनकर अन्य तीनों दीपों को भी अपने जीवन का महत्त्व समझ में आ गया।

मित्रो! अक्सर हमारे पास जो होता है हम उससे संतुष्ट नहीं होते और उन तीन दीपकों की तरह अपने कुम्हार अर्थात ईश्वर से शिकायत करते रहते हैं किन्तु यदि हम ध्यान से देखें तो हमारा जीवन स्वयं में बहुत महत्त्वपूर्ण है और हम जो हैं उसी रूप में इस जीवन को सार्थक बना सकते हैं अतः चौथे दीपक की तरह हमें संतुष्ट हो कर अपना जीने का प्रयास करना चाहिए।

नविका जिंदल
कक्षा - ग्यारह

"भरी दुपहरी में अँधियारा,
सूरज परछाई से हारा।
अंतरतम का नेह निचोड़ें,
बुझी हुई बाती सुलगाएँ
आओ फिर से दिया जलाएँ।
हम पड़ाव को समझे मंज़िल,
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल।
वर्तमान के मोहजाल में,
आने वाला कल न भुलाएँ ।
आओ फिर से दिया जलाएँ.."

श्री अटल बिहारी बाजपेयी

गौरव के क्षण

ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी अवार्ड्स (जीएसए) 2025 - शिक्षक श्रेणी के अंतर्गत सम्मानित किये जाने पर श्रीमती वनश्री स्कॉट को हार्दिक शुभकामनाएँ !

टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा राष्ट्रीय खेल दिवस पर सम्मानित किये जाने पर श्रीमती शेफाली वर्मा को अनंत शुभकामनाएँ !

एक मुलाकात : वैल्हम के रोल नंबर एक के साथ

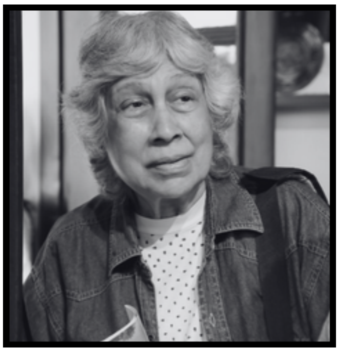
सुश्री प्रमिला नाज़िर

पिछले दिनों जैसे ही ज्ञात हुआ कि हमारे विद्यालय की सबसे पहली छात्रा प्रमिलाजी हमारे बीच उपस्थित हैं, हमने इसे अपना परम सौभाग्य माना कि उनसे मिलने का और अपने विद्यालय को और अधिक जानने का हमें अवसर मिलेगा । हम शीघ्र ही उनसे मिलने को आतुर हो उठे और उनसे ढेर साड़ी बातें की। प्रस्तुत है उनसे बातचीत के कुछ अंश -

- आशिया : वैल्हम की शुरुआत में आप केवल दस छात्राएँ थीं। आप सभी का योगदान विद्यालय की नींव को मजबूत बनाने में किस प्रकार रहा?

प्रमिला जी : वर्ष 1957 में वैल्हम में केवल दस लड़कियाँ थीं, और मुझे भी उनमें शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन प्रारंभिक दस वैल्हमाइट्स में पद्मा विभोर जैसी सहपाठिन थीं, और साथ ही महान स्वतंत्रता सेनानी लक्ष्मी सहगल की पुत्री, सुभाषिणी हगल भी थीं।

हम दस लड़कियाँ न केवल विद्यालय की नींव बनीं, बल्कि अपने साहस, उत्साह और ऊर्जा से वैल्हम की परंपराओं और मूल्यों को आकार देने में अहम भूमिका भी निभाई। उन सभी रहने का अनुभव आज भी मेरे लिए प्रेरणादायक और अविस्मरणीय है।

- आशिया : आप हम सभी वैल्हमाइट्स को क्या संदेश देंगी ?

प्रमिला जी : मैं तीन बातें हर वैल्हमाइट के दिल तक पहुँचाना चाहूँगी।

पहला अपने आदर्शों से समझौता न करें। चाहे हालात कितने भी कठिन हों, अपने मूल्यों को थामे रहना ही सच्ची सफलता है। दूसरा अपनी जड़ों को याद रखें। वैल्हम ने हमें जो संस्कार, परंपराएँ और पहचान दी हैं, उन्हें जीवनभर अपने साथ रखिए। यही आपको हर परिस्थिति में स्थिर बनाएंगे और तीसरा रिश्तों को संजोना सीखें। जीवन की दौड़ में समय की सबसे बड़ी क़ीमत है। अपने प्रियजनों और ज़रूरतमंदों के लिए समय निकालिए, क्योंकि अंततः वही पल आपको सच्ची खुशी देंगे।

- आशिया : 1957 से लेकर 2025 तक के वर्षों में आपको विद्यालय में क्या अंतर दिखाई दिए?

प्रमिला जी : 1957 के समय वैल्हम में सब कुछ बहुत सरल और सहज था। हर चीज़ नई थी और हमे 'प्रयत्न और अनुभव' के माध्यम से सीखने का अवसर देती थी। हमारी कक्षाएँ मुख्यतः नसरीन भवन में होती थीं, और उस समय हमारा जीवन बहुत सादा और सरल था मुझे खुशी हुई कि आज, 68 वर्षों के इस सफर में, भी विद्यालय की परंपराएँ और मूल्य अब भी जीवित हैं। मैं चाहती हूँ कि हमें हमेशा अपने भीतर उस "बिंदास वैल्हमाइट" की जीवंतता बनाए रखनी चाहिए, जो उत्साह, आत्मविश्वास और सरल आनंद के साथ जीवन को जीती हैं।

छोटा बटुआ, बड़े सपने

फिर से शुरू हुई हमारे विद्यालय में भी एक टक शॉप, जो प्रत्येक रविवार बड़े आँगन में सजती है और हम वैल्हमाइट्स के लिए अब तक का सबसे बड़ा आकर्षण है। प्रत्येक रविवार को हमारे छोटे आँगन में ऐसा कोलाहल होता है मानो भारत ने वर्ल्ड कप जीत लिया हो। टक शॉप एक ऐसा स्थान है, जहाँ जूनियर्स पहुँचते हैं अपने अस्सी रुपियों की छोटी पोटली के साथ और सीनियर्स अपने सौ रुपये के महाबजट के साथ। सबसे अद्भुत पल तो तब आता है जब कोई नया स्वाद स्टॉल पर दिखाई देता है। इस नए स्वाद का समाचार इतनी तेज़ी से फैलता है जैसे परीक्षा का रिज़ल्ट आ गया हो। देखते ही देखते पूरी भीड़ स्टॉल के पास एकत्रित हो जाती है। अपने हाथों में छोटे से खज़ाने और चेहरे पर चमक के साथ। रंग-बिरंगे चिप्स और चॉकलेट की कतारें देख कर लगता है जैसे हर पैकेट में एक नया स्वाद छिपा हो। यह टक शॉप एक ऐसा जीवंत स्थान है जहाँ होने वाली धक्कामुक्की और शरारतें बिल्कुल भी खराब नहीं लगतीं बल्कि यह तो हमारे प्रांगण को और भी जीवंत बना देती हैं। छोटा बटुआ अक्सर बड़े-बड़े सपनों को जन्म देता है और ये जो अस्सी रुपये हैं इनके साथ मन बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करने लगता है, जैसे कि "एक दिन मैं चिप्स के साथ बड़ी चॉकलेट भी लूँगी।"

इस टक शॉप से मुझे सोचने का अवसर मिलता है कि कभी-कभी जीवन में जेब हल्की होती है, पर मन उम्मीदों से भरा होता है। छोटा बटुआ इस बात का प्रतीक है कि हमारे पास साधन कम हो सकते हैं, लेकिन सपनों की उड़ान आसमान तक जा सकती है। वह दिन अब दूर नहीं जब हमारे प्रांगण में भी एक कैन्टीन होगी, भाँति-भाँति के पकवानों के साथ। ऐसा एक सपना मैंने भी देखा है क्योंकि सपनों पर अभी तक कोई जी एस टी नहीं लगता है!

शरण्या माहेश्वरी
कक्षा - ग्यारह

मौन मध्यस्थ, मुखर स्वार्थ

भारत की अनेक लोक कथाओं में हम देखते हैं कि दो व्यक्ति किसी वस्तु को लेकर आपस में झगड़ पड़ते हैं। दोनों अपने-अपने अधिकार का दावा करते हैं, अपनी बात को सत्य सिद्ध करने में लगे रहते हैं। तभी एक तीसरा व्यक्ति, स्वयं को न्यायप्रिय और सहायक बताकर, बीच-बचाव के बहाने आगे आता है। प्रारंभ में उसका उद्देश्य निष्पक्ष प्रतीत होता है, परन्तु धीरे-धीरे वह दोनों पक्षों के मतभेदों का लाभ उठाने लगता है। और अंत में, ये कथाएँ केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि मानव स्वभाव और समाज की गहरी परतों को उजागर करती हैं।

आज के समय में हम स्वयं देख रहे हैं कि ऐसी प्रवृत्तियाँ केवल लोक कथाओं तक सीमित नहीं रहीं, वे वैश्विक रूप में सामने आ रही हैं। जब दो शक्तियाँ अपने-अपने हितों, विचारों या सीमाओं को लेकर संघर्षरत होती हैं, तब एक तीसरी शक्ति प्रायः "शांति", "मदद" या "मध्यस्थता" के नाम पर हस्तक्षेप करती है। परंतु इस हस्तक्षेप के पीछे अक्सर न्याय नहीं, बल्कि स्वार्थ, सत्ता और प्रभाव का खेल छिपा होता है।

यह प्रवृत्ति हमें एक गहरी सच्चाई का बोध कराती है कि इतिहास के पन्ने बदलते रहते हैं, पात्र और मंच नए हो जाते हैं, पर मानव की महत्त्वाकांक्षा और अवसरवादिता वैसी ही बनी रहती है। अंततः यही कहा जा सकता है कि जब एकता बिखरती है, तब चालाकी अवसर बन जाती है, और दूसरों के संघर्ष से कोई तीसरा अपने साम्राज्य की नींव बना लेता है।

आशिया महाजन
कक्षा - बारह

बदलते सपने

बचपन में परिवर्तित होते थे हमारे सपने!
कभी डॉक्टर, कभी वैज्ञानिक, और कभी शिक्षक, इंजीनियर
सब कुछ चाहते थे बनना।
मानों छू लेना चाहते थे आकाश,
उम्र के इस पड़ाव पर मालूम हुआ,
एक सपने को शिद्दत से चाहना,
निरंतर काम करते रहना है कितना मुश्क़िल।
भटकते है मन, भटक जाते है हम भी,
कितना मुश्किल होता है अडिग होना,
डटे रहना,
किन्तु एक लक्ष्य साध लेना चाहिए,
और बन जाना चाहिए ध्रुव तारा।
सीख लेना चाहिए अडिग रहना,
सीख लेना चाहिए डटे रहना,
और सीख लेना चाहिए धैर्य।
संभवतः
फिर ही चमकेंगे तारों की भाँति!

अक्षिता शर्मा
कक्षा - बारह

शब्दहार: मेघ से मेघमाला तक

आकाश के भाल पर मेघों का घिर आना ग्रीष्म के ताप से राहत देता है, वहीं माटी की सौंधी सुवास लोक में आनंद का संचार करती है। महाकवि कालिदास के काल से ही आषाढ़ के ये मेघ मनुष्यों के मन को रिझा रहे हैं। वर्षा ऋतु का आगमन होना मेघागम है और यह ऋतुरानी मेघकाल कहलाती है। गगन मेघद्वार, मेघमंडल है। यही नील गगन बादलों से ढक जाए तो वह मेघाच्छन्न हो जाता है। मेघों की पंक्ति कादम्बिनी, मेघमाला कहलाती है। आकाश में घनघोर घटा छा जाए तो मेघजाल है। ये श्याम मेघ गरजने लगें तो मेघाडंबर, मेघरव और मेघनिर्घोष है। इसी गर्जन के संग थर्रा देने वाली बिजली चमक जाए तो वह मेघज्योति कहलाती है। देवराज इन्द्र वर्षा के अधिपति हैं अतः उनका नाम मेघवाहन, मघवन और मेघेश है। जो बादल के रंग वाला है वह है मेघवर्ण और नील का पौधा है मेघवर्णा। मेघों की घटा यदि आकाश में उठ आए तो मेघोदय हो जाता है। इसके विपरीत यदि वर्षा का अंत हो जाए और शरत के आगमन को प्रकृति कास के श्वेत पुष्पों की ओढ़नी धर ले तो वह मेघांत है। नृत्य करके वर्षा के आगमन में आनंद से पलक बिछाने वाला मोर मेघानंदी कहलाता है। वहीं चातक सदा वर्षा बूँदों से ही तृप्ति पाता है, अतः वह मेघजीवन कहलाता है। लंकेश पुत्र ने मंदोदरी के गर्भ से जन्म लेते ही मेघ के समान गर्जना की थी, अतः उसका नाम मेघनाद हुआ। लंका के युद्ध में इसी मेघनाद का वध लक्ष्मण ने किया था, इसलिए वे मेघनादजित् कहलाये।

अंतत: कामना यही है कि इस मेघकाल में मेघ आकाशचारी रहें, मेघपुष्प से धरती की शिराओं में सरिताएँ प्रवाहमान हों, मेघव्रती का व्रत निर्जल न रहे और मेघ राग दश दिगन्त तक गुंजायमान हो, जिससे मर्त्य मनुजों के मन का मेघसुहृद नृत्य करता रहे।

डॉ ऋतु पाठक

परदे के पीछे

क्या करूँ? क्या न करूँ? ये कैसी मुश्किल हाय !

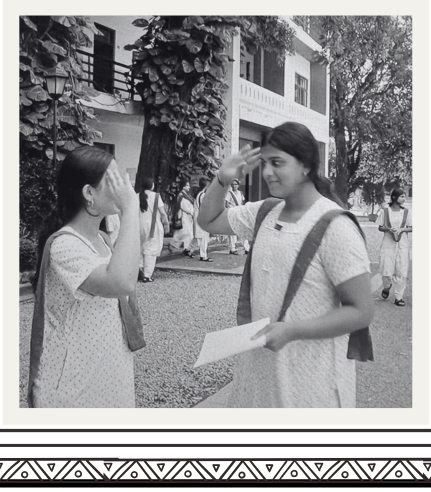

"क्षितिज परिवार की ओर से"

"रास्ता कोई भी हो, बस संकल्प लक्ष्य दृढ़ चाहिए।
विश्वास अन्तर्मन हो अटल, आश्वस्त श्रम फल चाहिए।
निर्मल सदा श्रमजीवी चरित, रण संयम महारथ चाहिए।
सुदृढ़ मनोबल सत्पथ निरत, धीरज साहसी हठ चाहिए।"

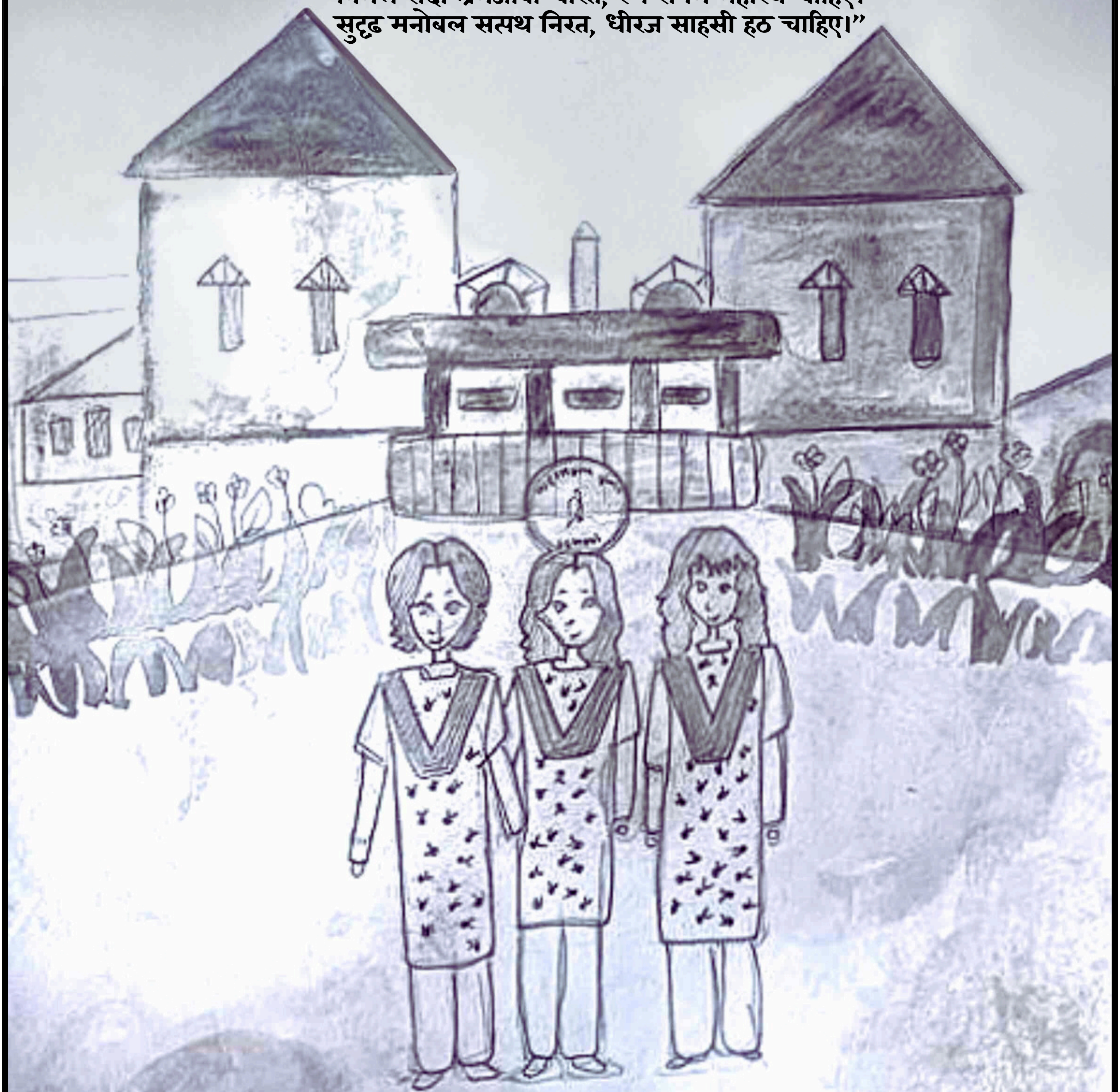

संपादक मंडल

मुख्य सम्पादिका
आशिया महाजन

सहायक मण्डल
नविका जिंदल
पावनी महेंद्र
आर्या शर्मा
नभ्या शेखर
राजवी बनिक
अक्षिता शर्मा

चित्रकार
श्रेया अग्रवाल
धनश्री भूपाल
टिया कपूर

प्रभारी शिक्षिका
डॉ. ऋतु पाठक

सौजन्य से - धनश्री भूपाल